पाठ 21

सुवागीत

—लेखक—मंडल

7IHD4G

हमर छत्तीसगढ़ के संस्कृति ह बड़ जुन्ना संस्कृति आय। ये ह मुँहअँखरा—साहित्य के कोठी आय। ये कोठी म आने—आने किसम के गीत घलो भरे हे। इही गीत मन म सुवागीत के महक ह कारी—कमोद धान कस होथे—महर—महर। गाँव के नारी—परानी मन ये गीत ल अपन हिरदे ले गाथें, जइसे ये गीत ह उँकर मन के हिरदे के भाषा होय।

छत्तीसगढ़ ह लोकगीत के फुलवारी आय। जेमा रकम — रकम के लोकगीत के फूल फुले हे। लोकगीत ओला कहिथे जेन ह तइहा जुग ले मुँहअँखरा लोक—जीवन म रचे — बसे हे अउ आज ले एहा मुँहअँखरा चले आवत हे। न एखर लिखइया के नाँव—पता हे,न एकर गवइया के नाँव—पता ।

हमर छत्तीसगढ़ म करमा,ददरिया,भोजली,गउरा,जँवारा,पंथी,डंडागीत गाये जाथे। अइसने एक ठन सुवागीत घलो आय। सुवा मायने मिट्ठू। तइहा जुग म मिट्ठू ले संदेसा पठोय जात रहिस। सुवागीत म नारी—परानी मन अपन अंतस के मया—पीरा ल गीत रूप म उद्गारथें। अउ सुवा ल संबोधित करके गाथें। एकरे सेती ये गीत ल सुवागीत कहिथें।

सुवागीत कातिक महिना म देवारी तिहार के दू—चार दिन आगू ले शुरू होथे। सुवागीत, गीत भर नोहय,एमा नृत्य घलो होथे। सुवागीत अउ नृत्य ह टोली म होथे, जेमा नारी — परानी मन दस—बारा झन रहिथें। माटी के सुवा बना के ओला टुकनी म राखथें। टुकनी के सुवा ल मँझोत म मढ़ा के नारी—परानी मन गोल घेरा बना के थपोली बजाथें अउ सुवागीत गाके नाचथें। सुवागीत म कोनो बाजा के प्रयोग नइ होय। हाथ के थपोली ह ताल के काम करथे। एमा लइका मन,मोटियारी अउ सियानिन मन के अलग—अलग दल रहिथे। दल वाले मिलके गाथें त बड़ नीक लागथे। निहर—निहर के, झूम—झूम के अउ घूम—घूम के, ताली बजा के नाचथें त सुवागीत अउ नृत्य के सोभा देखतेच बनथे।

सुवा नचइया जम्मो दाई—दीदी मन गाँव भर गिंजर—गिंजरके घरो—घर सुवानृत्य करथें। सुवागीत—नृत्य कब ले शुरू होय हे,एकर कोनो लिखित रूप नइ मिलय। फेर सियान मन कहिथें के ये गजब जुन्ना परंपरा आय। सुवानृत्य काबर नाचे जाथे ? ये सवाल के उत्तर म सियान मन बताथें के सुवानृत्य ले सकलाय धान—चाँउर अउ रुपिया—पइसा ले गउरा बिहाव के खरचा पूरा होथे।

सुवागीत ल नारी–परानी के पीरा के गीत कहे गे हे। काबर के सुवागीत म ओकर अंतस के पीरा अउ ओखर जिनगी के दुख–दरद जादा सुने बर मिलथे। सुवागीत के ये विशेषता हे के एहा 'तरी–हरी नाना,नाना सुवा हो',के बोल ले शुरू होथे। जइसे –

तरी–हरी नाना मोर नाह नारी ना ना रे सुवा मोर
के तिरिया जनम झनि देय,
तिरिया जनम मोर गउ के बरोबर रे सुवना
जहाँ रे पठोय तिंहा जाय,ना रे सुवना ....

सुवा गीत म नारी के दुख–पीरा भर ह नइये, एमा घर–दुवार, खेत–खार,बारी–बखरी, जंगल–पहार,मया–दुलार,साज–सिंगार,धरम–करम,जीवन के मरम, देश अउ समाज के विषय घलो समाय हे, जइसे चिरइ–चुरगुन के बोली उपर ये गीत –

तरी हरी नाहना मोर नाना सुवा रे मोर
तरी हरी ना मोर ना

कोन चिरइया मोर चितर काबर रे सुवना
के कोन चिरइया के उज्जर पाँख–ना रे सुवना
भरही चिरइया मोर चितर काबर
बकुला चिरइया के उज्जर पाँख–ना रे सुवना

कोन चिरइया मोर सुख सोवय निंदिया
कोन चिरइया जागय रात–ना रे सुवना
भरही चिरइया सुख सोवय निंदिया रे सुवना
बकुला जागय सरी रात–ना रे सुवना

नान्हे नोनी ल सुवा नाचे के साध हे त ओ ह अपन दाई करा गोहरावत हे अउ ओकर गहना–गुरिया ल पहिरे बर माँगत हे। एखर सुग्घर बरनन ये गीत म हवय –

दे तो दाई गोड़ के पइरी ल
कहाँ जाबे
सुवा नाचे बर
दे तो दाई तोर बहूँटा ल
कहाँ जाबे
सुवा नाचे बर
दे तो दाई तोर सुतिया ल
कहाँ जाबे
सुवा नाचे बर

घर–परिवार ले आगू देश अउ समाज के हाल–चाल घलो सुवागीत के विषय आय। अजादी के पहिली देश–परेम के भावना जगाय बर सुवागीत ह सबल माध्यम रहिस–

सुवना हो ......
दीदी के घर ह सुतंत्र होगे
जोर मारिस भाँटो ह, सुवना हो......
होगे सुराजी भाँटो ह सुवना
महूँ होहूँ सुराजी ......
कोने डहर के बबा आइस
कोने डहर के बाती बारिस
कान फुँकाहूँ ओ सुवना.......

कान फुँकाहूँ ओ सुवना.......
संत के बानी ये, जागौ रे सुवना...
सुराजी गीत ल, गावौ ओ सुवना...
रेलवाही म सुतगे बबा ह सुवना....
चलो जाबो रेलवाही सुवना......

सुवागीत म कथागीत गायन के घलो परंपरा मिलथे। जइसे हरिसचंद,राम बनवास,सीता हरन, कालिया दहन, मोरध्वज, सुरजा रानी अउ अइसने कतको प्रसंग सामिल हे–

तरी–हरी नाना मोर ना ना नाना
मय का जानँव, मय का करँव
मोर राम नइ हे ओ
अब सीता ल लेगथे लंका के रावन
मय का करँव
जोगी के रूप धरे निसाचर,
दे भिक्छा मोहि माई,
लेकर भिक्छा अँगन बीच ठाढ़े
रथ में लिए बैठाई
मय का करँव

सुवा नाचे के बाद घर मालकिन ह सुवा नचइया मन के मान–गउन करथे,उँकर टुकनी म धान–चाँउर दे के बिदा करथे त सुवा नचइया मन गीत गाके असीस दे बर नइ भुलाँय। सुवागीत छत्तीसगढ़ के नारी मन के जिनगी के दरपन आय,उँकर हिरदे के उद्‌गार आय,जेन ह मोंगरा फूल कस ममहावत हे। हमर लोकगीत के फुलवारी ह अइसने ममहावत रहय, इही साध हे।

छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ

किसम	=	प्रकार	ओला	=	उसे
तइहा जुग	=	अतीत	मुँहअँखरा	=	मुखाग्र
अइसने	=	इसी प्रकार	एखरे सेती	=	इसी कारण
कातिक	=	कार्तिक	थपोली	=	ताली
नीक	=	अच्छा,ठीक	गिंजर–गिंजर	=	घूम–घूमके
निहर–निहर	=	झुक–झुककर	जुन्ना	=	पुराना
सकलाना	=	इकट्ठा होना	तिरिया	=	नारी
नोनी	=	बेटी,लड़की	गोड़	=	पैर

अभ्यास

पाठ से

1. कइसने गीत ल लोकगीत कहिथें ?
2. हमर छत्तीसगढ़ में गाए जाने वाला लोकगीत मन के नाव लिखव।
3. सुवागीत ल सुवागीत काबर कहिथें ?
4. सुवानाच कब नाचे जाथे अउ कोन तरह ले नाचे जाथे ?
5. सुवागीत म ढोलकी ले ताल दे जाथे ।
6. सुवा नाच–गीत ह नारी–परानी के गीत काबर माने गेहे।
7. सुवा नाच म माटी के सुवा काबर बनाय जाथे।
8. सुवा नचइया मन घर–मालकिन ल का असीस देथें।

पाठ से आगे

1. कोन–कोन विषय ऊपर सुवागीत गाए जाथे, बने ओरिया के लिखव। अउ अपन कक्षा में उही एकोठिन गीत ल गा के देखव।
2. सुवागीत के चार पंक्ति लिखव जेमा नारी–परानी के हिरदे के पीरा परगट होथे।
3. सुवागीत म कथा–गीत के उदाहरण लिखव।

4. सुवा नचइया मन घरो–घर जाथें। ओमनला देखके आप मनके मन में का–का भाव उठते लिखव।

5. सुवा नचइया मन के मान–गउन म जउन धान–चाँउर अउ पइसा–कउड़ी मिलथे, तेला सुवा नचइया मन कामे खरचा करत होही, पूछ के लिखव ?

7J6964

भाषा से

1. 'दुख–दरद' अउ 'मान–गउन' शब्द मन ऊपर धियान देवव। ये मन जोड़ी वाला (शब्द–युग्म) शब्द आयँ। पाँच ठन जोड़ी वाला (शब्द–युग्म) शब्द सोंच के लिखव अउ अपन वाक्य म प्रयोग करव।

7JF57R

2. 'गिंजर–गिंजर' शब्द ऊपर धियान देवव। इहाँ 'गिंजर' शब्द ह दू बेर आय हे। यहू मन जोड़ी वाला शब्द आयँ। फेर अइसन जोड़ी वाला शब्द मन ल 'पुनरुक्त शब्द' केहे जाथे। अइसन शब्द के परयोग अपन भाव ऊपर जोर दे खातिर अउ ओकर अर्थ ल पोठ बनाय बर करे जाथे।

   पाँच ठन पुनरुक्त शब्द सोंच के लिखव अउ अपन वाक्य म परयोग करव।

3. ये पाठ म 'नोहे' शब्द के प्रयोग करे गे हे। ये शब्द ह 'नइ' अउ 'हवय' के मेल ले बने हे। अइसने अउ शब्द हें– नइये (नइ + हे),थोकिन (थोर + किन)। अइसन शब्द मन मुँह ला सुख दे खातिर अउ समय ल बचाय बर अपने–अपन बनत रहिथें।

   ऊपर के उदाहरण असन पाँच शब्द खोज के लिखव अउ वाक्य बनावव।

योग्यता विस्तार

1. सुवागीत के जइसे छत्तीसगढ़ के अउ दूसर लोकगीत मन ल घलो सकेलव।

7JP19E

2. डंडा–नृत्य–गीत कब नाचे–गाये जाथे ? एकर बारे म अपन गाँव के सियान मन ले पूछव।
3. घर के सियान मन ले पूछ के अउ सुवागीत अपन कापी म लिखव अउ सकेलव।
4. सुवागीत के तर्ज म एक ठन गीत बनावव अउ गावव।